षष्ठ प्रश्न पत्र
व्याकरण (स्त्री प्रत्यय)
तृतीय कालांश

सं० शि० साजन कुमार
एस० बी० एस० एस०
कॉलेज बेगूसराय

9) वोतोगुणवचनात् 4.1.44

अर्थ :- गुणवाची ह्रस्व उकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग की विवक्षा में विकल्प से ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे - मृदु + ङीष्

=> 'उ' को 'व' आदेश 'इकोयणचि' सूत्र से - मृद् + व + ई

=> मिलाने पर - मृद्वी

=> अभावपक्ष में मृदुः शब्द निष्पन्न होगा।

14) पुंयोगादाख्यायाम् 4.1.48

अर्थ :- जो पुरुषवाचक शब्द का सम्बन्ध स्त्रीलिंग में विद्यमान हो, उससे ङीष् प्रत्यय होता है।
जैसे - गोप + ङीष्

=> 'यस्येति च' से अकार का लोप - गोप् + ई

=> मिलाने पर रूप निष्पन्न - गोपी

10) बह्वादिभ्यश्च 4.1.45

अर्थ - बहु आदि शब्दों से भी वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय होता है। जैसे - बहु + ङीष्

=> 'उ' को 'व' आदेश 'इकोयणचि' सूत्र से - बह् + व + ई

= मिलाने पर - बह्वी

=> अभावपक्ष में - बहुः रूप बनता है।

12) प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात् इदाप्यसुपः 7.3.44

अर्थ :- प्रत्ययस्थ ककार से पूर्व अकार को इकार आदेश होता है, आप परे रहते। यदि वह आप प्रत्यय सुप् से परे न हो। जैसे - सर्वक + टाप्

⇒ ट् तथा प् के लोप होने पर शेष बचा आप् - सर्वक + आप्

⇒ 'आप्' परे रहते 'प्रत्ययस्थात् कात् पूर्वस्यात् इदाप्यसुपः' सूत्र से प्रत्ययस्थ ककार से पूर्व अकार का इकार आदेश } सर्विक + आप्

⇒ 'प्' का लोप तथा दोनों को मिलाने पर सिद्ध - सर्विका

13) इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक् 4/1/49

अर्थ :- इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य, यव, यवन, मातुल और आचार्य शब्दों से आनुक् प्रत्यय होता है तथा ङीप् प्रत्यय भी होता है। जैसे - इन्द्राणी

इन्द्र + आनुक् + ङीप्

⇒ आनुक् का आन् शेष रहता है - इन्द्र + आन् + ई

⇒ मिलाने पर - इन्द्रान् + ई

⇒ 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से 'न्' को 'ण्' आदेश } इन्द्राण् + ई

⇒ मिलाने पर रूप निष्पन्न - इन्द्राणी

इसी प्रकार वरुण से वरुणानी, भव से भवानी शर्व से शर्वाणी, रुद्र से रुद्राणी, मृड से मृडानी हिम से हिमानी रूप निष्पन्न होता है।

14) क्रीतात् करण पूर्वात् 4.1.50

अर्थ :- करण पूर्व एवं क्रीतान्त ह्रस्व अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीत्व की विवक्षा में वैकल्पिक 'ङीष्' प्रत्यय होता है। जैसे - वस्त्रेण क्रीता = वस्त्रक्रीती - वस्त्रक्रीत + ङीष्
:) ङ् तथा ष् का लोप होने पर - वस्त्रक्रीत + ई
:) मिलाने पर - वस्त्रक्रीती

15) स्वाङ्गाच्योपसर्जनाद्असंयोगोपधात् . 4।1।54

अर्थ :- असंयोगोपध तथा विशेषणवाची जो स्वांग वाचक शब्द है, तदन्त से स्त्रीलिङ्ग की विवक्षा में वैकल्पिक ङीष् प्रत्यय होता है। जैसे - अतिकेशी अथवा अतिकेशा।